खबर की शुरुआत में हुआ है) से अपने छोटे भाई देवलाल को फोन लगाया. हादसे से वाकिफ होने के बाद देवलाल ने अंबिकापुर के जयनगर पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई. देवलाल का आरोप है कि चाय-पानी और दिल्ली आने-जाने के नाम पर पुलिस ने उससे भारी-भरकम रकम की मांग की. जब उसने गरीबी के चलते इसमें अपनी असमर्थता जताई तो पुलिस ने उसे खुद ही दिल्ली जाकर खोजबीन करने की सलाह दे डाली. मामूली-सी जमीन के सहारे परिवार का भरण-पोषण करने वाला देवलाल इधर-उधर से कर्ज लेने के बाद दिल्ली स्थित उपर्युक्त पते पर पहुंचा तो उसकी मुलाकात एक सरदार जी से हुई. उन्होंने पतांगो को सौंपने की बात तो कही लेकिन साथ ही यह जानकारी भी दी कि उन्होंने पतांगो द्वारा किए जाने वाले काम-काज के एवज में अनिल यादव को हर महीने 4000 रुपये देने का अनुबंध कर रखा है. देवलाल के मुताबिक सरदार जी ने उससे कहा कि यदि पतांगो बगैर किसी सूचना के उनके घर से चली जाएगी तो यादव उन पर केस कर देगा. अपनी बहन की घर वापसी के लिए देवलाल ने यादव से पहले फोन पर और बाद में सीधे संपर्क साधा, मगर उसे डरा-धमकाकर वापस भेज दिया गया. मायूस देवलाल ने 19 सितंबर, 2011 को हमसे अपनी व्यथा बताई. व्यथा को सुनने के बाद जब हमने छत्तीसगढ़ में पहाड़ों और जंगलों से घिरे कुछ और घरों में दस्तक दी तो पता चला कि छत्तीसगढ़ की लड़कियों को महानगरों में महारानी जैसा जीवन बिताने का झांसा देकर नरक में ढकेलने का गंदा खेल काफी अरसे से चल रहा है.

जानकार बताते हैं कि इस खेल की शुरुआत 2000 के आसपास अंबिकापुर जिले के मैनपाट इलाके से हुई जब तलछटी में रहने वाली लड़कियां बनारस के कालीन उद्योगों में प्रशिक्षण पाने के लिए आना-जाना कर रही थीं. जशपुर जिले के आदिवासियों की लड़कियों की आवाजाही भी कुछ इसी तरह की थी, लेकिन जल्द ही लड़कियों के दैहिक शोषण की बजबजाती हकीकत भी सामने आ गई.

छत्तीसगढ़ में 2009 से लेकर जुलाई, 2011 तक कुल पांच हजार 993 लड़कियों के गुम होने की रिपोर्ट दर्ज की गई है

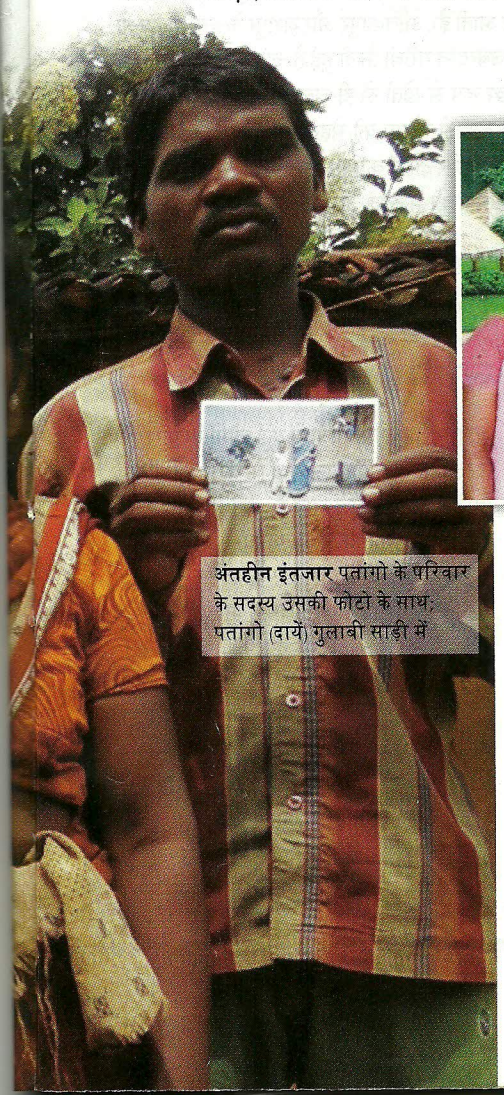

अंतहीन इंतजार पतांगो के परिवार के सदस्य उसकी फोटो के साथ. पतांगो (दायें) गुलाबी साड़ी में

आशीष रंगनाथ

लड़कियों को अंधी गलियों में धकेलने का यह सिलसिला अब भी थमा नहीं है. हाल ही में छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष विभा राव ने प्रदेश से 16 हजार लड़कियों के गायब होने की बात कही थी. जब बयान पर बवंडर मचा तो राव अपनी बातों का खंडन-मंडन करने लगीं. लेकिन प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष नंदकुमार पटेल महिला आयोग के अध्यक्ष के बयान को पूरी तरह से सच के करीब पाते हैं. वे कहते हैं, 'आयोग की अध्यक्ष ने जुटाए गए तथ्यों के आधार पर ही अपनी बात कही होगी, और यह सच भी है क्योंकि प्रदेश से बड़े पैमाने पर लड़कियों की तस्करी हो रही है.'

पुलिस मुख्यालय में स्थापित अपराध अनुसंधान केंद्र के आंकड़े भी यह बताते हैं कि प्रदेश में लड़कियों और महिलाओं की गुमशुदगी के दर्ज प्रकरणों की संख्या में इजाफा हुआ है. प्रदेश के 18 जिलों, तीन पुलिस जिलों और रेलवे क्षेत्र के थानों में वर्ष 2009 से लेकर जुलाई, 2011 तक कुल पांच हजार 993 लड़कियों के गुम होने की रिपोर्ट दर्ज की गई है. इसी तरह इन वर्षों में आठ हजार 159 महिलाएं भी गायब हुई हैं. यदि बीते तीन साल का यह हाल है तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि वर्ष 2000 से लेकर 2008 तक छत्तीसगढ़ से कितनी लड़कियां गायब हुई होंगी.

गुमशुदगी की इस गुत्थी को जानने-समझने के लिए हमने सरगुजा, जशपुर, रायगढ़ और दुर्ग जिलों के बहुत-से घरों में दस्तक दी. पता चला कि इस इलाके में पतांगो और देवलाल जैसी कई कहानियां बिखरी पड़ी हैं.

लौटकर आए तो लेकिन...

महानगर विशेषकर दिल्ली की प्लेसमेंट एजेंसियों ने छत्तीसगढ़ की लड़कियों को हासिल करने के लिए गांव-गांव में महिला और पुरुष एजेंटों की तैनाती कर रखी है. अंबिकापुर जिले में लड़कियों की मनोदशा और घर छोड़ने की परिस्थितियों पर कार्यरत एक संस्था आशा के कुछ कार्यकर्ताओं ने हमें यह बताया था कि सीतापुर तहसील के ग्राम ललितपुर में रहने वाली एक लड़की तुल्जा को राजू आरती प्लेसमेंट एजेंसी के लिए काम करने वाली एजेंट ज्योति खलखो तब अगवा कर ले गई थी जब वह 13 साल की थी. तुल्जा को चार साल दिल्ली और एक साल गाजियाबाद में रहना पड़ा. इन दौरान उसे हर बार 1000 रु महीने के हिसाब से अलग-अलग कोठियों में नाम बदल-बदलकर बेचा जाता रहा. मालिकों के वहशियाना व्यवहार से परेशान तुल्जा ने एक रोज किसी परिचित के माध्यम से अपने परिजनों को फोटो के साथ सूचना भिजवाई. बेटी को दलालों के चंगुल से मुक्त करवाने के लिए तुल्जा के पिता सनकूराम ने भी इधर-उधर से कर्ज लिया और अपने बेटे जशिम कुजूर को दिल्ली भेजा. काफी जद्दोजहद के बाद तुल्जा घर लौट आई, लेकिन जब हम तुल्जा उर्फ पूजा से मिलने उसके घर पहुंचे तो पता चला कि चंद रोज पहले ही उसे एक बार फिर से अगवा कर लिया गया है. इस बार भी तुल्जा को गायब करने वाली कोई लड़की ही थी. परिजनों ने उसका नाम रोशनी बताया. ललितपुर के गुरगुमा बारगाई पारा में अपने